नीके बोल बुंदेली के

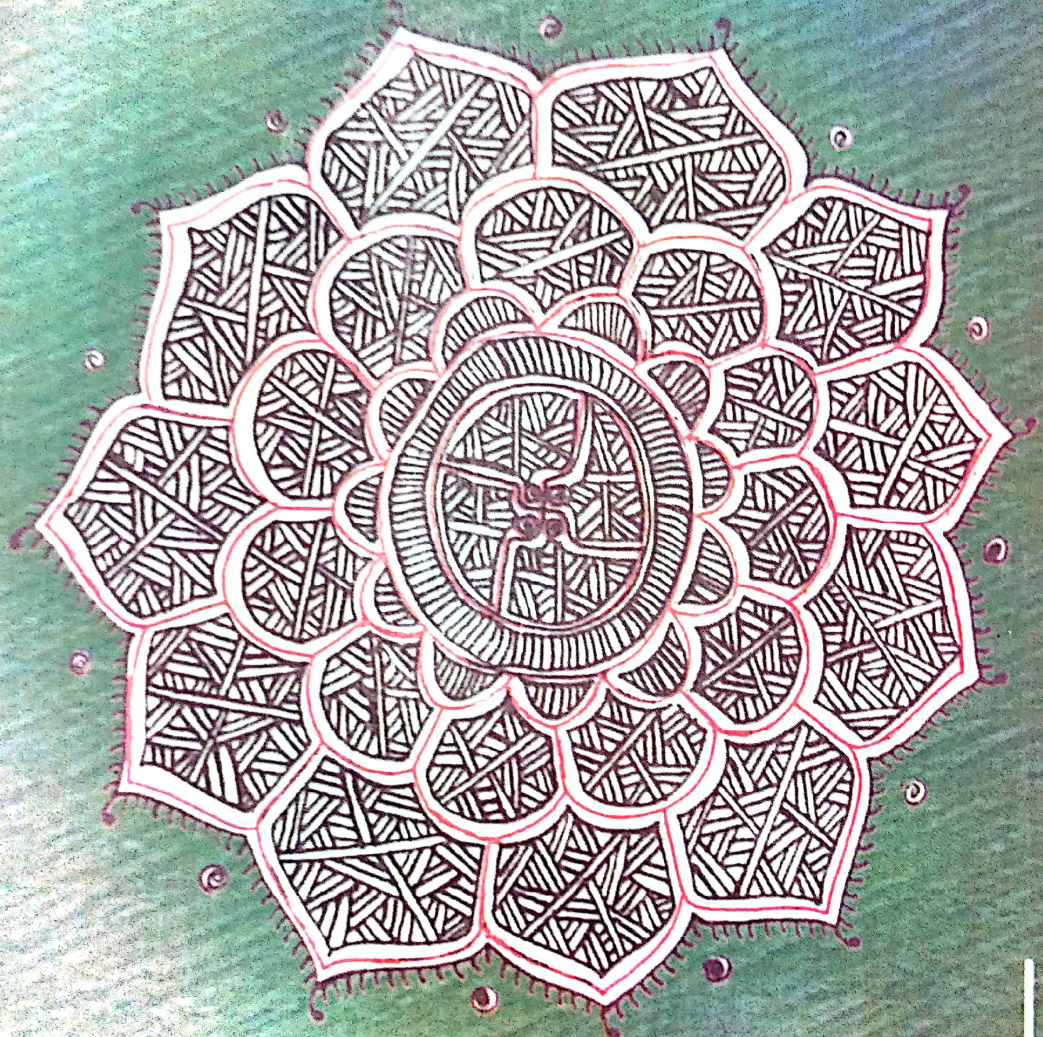

संपादक
कैलाश मड़बैया

Scanned with OKEN Scanner

नीके बोल बुंदेली के

संपादक
कैलाश मड़बैया

मनीष प्रकाशन, भोपाल

अखिल भारतीय बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद, भोपाल

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 81-86364-18-8

प्रकाशक
मनीष प्रकाशन
75, चित्रगुप्त नगर, कोटरा, भोपाल-03
फोन 0755-2774037, मोबा. 09826015643

© सृजन एवं संपादन : **कैलाश मड़बैया**

प्रथम संस्करण 2011

मूल्य ₹ 200.00 (दो सौ रुपये)

आकल्पन
राकेश सिंह
हर्षवर्द्धन नगर, भोपाल, मो. 9827765265

मुद्रक
रुचि प्रिन्टर्स
गोविन्दपुरा, भोपाल, फोन 0755-2784178

NIKE BOL BUNDELI KE

By Kailash Madbaiya

बुंदेली गद्य की 'बाँके बोल बुंदेली के' और 'मीठे बोल बुंदेली के' के बाद
तीसरी प्रमाणित कृति

(लेखकन के विचार उनके अपनें है, बेई इनके लानें जिम्मेदार हैं)

Scanned with OKEN Scanner

नीके बोल बुंदेली के

बोल तौ सबई नोंने नीके होत पै बुंदेलिअई बोलन खों हम काय नीको कै रये जौ सवाल आपके हिये में जरूर उठ रऔ हुइयै। ऐसें तो सबई खों अपनी शकल औ अपनी अकल भौत नौंनी लगत पै जौ नों दूसरे नईं मानें तौ नौं थोरी, नौंनी क्वाउत। 1991 में हमनें बुंदेली गद्य में पैली पोथी छपाई ती जी कौ नाव तौ-'बाँके बोल बुंदेली के' बा साँसउँ सबई खों ऐसी साजी लगी कै हमईं ने इत्ती नईं सोसी ती। ऊ के पाछें मन में एकई मंसा हती कै बुंदेली में पद्य में तौ भौत काम भऔ पै भाषा की मान्यता के लानें गद्य में न केवल साहित्य रचवो जरूरी है वरन बुदेलखण्ड की ठसक ई में अवश्य भए चाइये। साँसउँ बुंदेले बाँकपन कौ कउँ सानी नइयाँ। बुंदेलखण्ड में बारवीं सदी के आला-उदल सें लैंके सत्रवीं सदी में छत्रसाल नें विदेशी मुगलन सें औ 1842, 1857 और 1947 की आजादी में विदेसियन सें लड़वे में जौन सूरमाई बुंदेलखण्डियन ने दिखाई ती बा जग जाहर है। एई सें कानात चल परी कै 'सौ डण्डी औ एक बुंदेलखण्डी' मतलब सौ डण्डे/लट्ठ बारन खों एक बुंदेलखण्डी भौत है। जगनिक की आला में लिखीं जे लैनें-'बड़े लड़ैया महोबे बारे....' उर-'एक के मारें दो मर जावें तीजौ मरै सनाका खाय' फिर सुभद्रा कुमारी चौहान जू की जे पक्तियाँ भुलाईं नईं भूलतीं-'बुंदेले हरबोलों के मुँह हमनें सुनी कहानी थी।' सो 'बाँके बोल बुंदेली के' में हमनें बुंदेली ठसक दिखाई। फिर लगो कै बुंदेली गारियन कौ गुरीरौपन तौ ब्रजवासी का, पूरौ देश मानत। कत हैं कै अगर भाषा की मिठास देखनें होय तौ बुंदेली गारीं सुन लो। अब बताऔ, एक तौ गारीं मानैं बुरईं बातें और वे भी ऐसीं कै सुनलो सो मिसरी सी घुरन लगत। विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ई वानी खों ब्रजबुलि कहत ते-ऐसी हमें स्व. वियोगी हरि जू नें, मोई किताब 'महक माटी की' की भूमिका में बताओ तौ। सो भौत का नों बहोरें..... हमने बुंदेली गद्य में वेई गुरीरी बानगी दैवे के लानें सन् 2008 में किताब प्रकाशित करी-'मीठे बोल बुंदेली के' औ लाग की बात कै जा पोथी सोऊ बुंदेलखण्ड में और बायरे तक ऐसी पुसानी कै बुंदेली गद्य को आन्दोलनइ अपनें पाँवन ठाँड़ौ हो कें चल परो। ऐन चर्चा भई ई पोथी की उर बुंदेली सम्मेलन के संगै पत्रिकायें कछु जाँगाँ से प्रकाशित होन लगीं। पै इन दोउ पोथियन में बुंदेली के बन्न बन्न रूप हते। पवाँरी, खटोला, लोधंती, बनाफरी, गोंड़वानी, सगरयाउ, डंगयाउ आदि। सबई उपबोलियन के या कयें चाइये बुंदेली की सबरे उप रुपन नें मिलकें, रंग-विरंगौ गुलदस्ता भर बनाऔ तौ। जब कै

Scanned with OKEN Scanner

किते का है? (अनुक्रमणिका)

संपादकीय : कैलाश मड़बैया ●

लोक साहित्य साँची संजीवनी : गंगा प्रसाद बरसैंया / 1

अंगना में हरी हरी दूबा : कामिनी / 5

रियासती बुंदेलखण्ड के क्रांतिदूत : शंभुदयाल गुरु / 9

आसमान की मामुलिया : दुर्गाचरण शुक्ल / 15

बुंदेली मानक : कारक : पी.दयाल श्रीवास्तव / 22

खुसरो और बुंदेली दलित : लखन लाल खरे / 33

ब्रज और बुंदेली : राम स्वरूप `स्वरूप' / 37

मुँह बोली बुंदेली : विमला तिवारी / 41

बुंदेली काव्य परम्परा : देवकी नंदन `शाँत' / 44

बुंदेलखण्ड की पुरा सम्पदा : हरिमोहन पुरवार / 51

बुंदेली आल्ह खण्ड : श्याम बिहारी श्रीवास्तव / 57

'जय वीर बुंदेले ज्वानन की', (समीक्षा) : राजेन्द्र चतुर्वेदी, अनुवाद : संतोष / 60

मोए टेर वें गाँव : महेश कटारे `सुगम' / 66

महिलाओं की मजबूती : मालती मड़बैया / 69

बुंदेलखण्ड में दलित विकास : रामजी लाल चतुर्वेदी / 73

बुंदेली : मध्य, उत्तर, दक्षिण में : प्रभा `शील' / 78

ईसुरी के दो रंग : प्रेम प्रकाश चौबे / 85

Scanned with OKEN Scanner

छोटे 'अ' को कछु नइँ (व्यंग) : बासुदेवशरण दुबे वासिक / 90
अहाने के बहानें : हरिविष्णु अवस्थी / 93
बुंदेलखण्ड के खेल : साकेत सुमन चतुर्वेदी / 96
बुंदेली लोक वैज्ञानिकता : किशन तिवारी / 102
बुंदेली भाषा अतीत-वर्तमान : दुर्गेश दीक्षित / 105
मंदिरों की बस्ती : सुशील खरे 'वैभव' / 114
बुंदेली तीज त्योहार : राघवेन्द्र उदानिया / 120
सामाजिक संरचना सें बुंदेली : सुदेश सोनी 'स्वदेश' / 131
महंगाई डाइन खाए जात है : देवेन्द्र कुमार जैन / 135
ऐसी का कोउ की गोरी : अरुण 'अपेक्षित' / 138
बुंदेलखण्ड में तकनीकी शिक्षा : रामशरण / 141
मरदन सें तिरिया करें : लोकेन्द्र सिंह नागर / 144
बुंदेली बुड़की : देवदत्त द्विवेदी / 149
छिंदवाड़ा तक बुंदेली : अवधेश तिवारी / 152
सुंदरता कौ बंदरबाँट : दिनेश बैस / 154
लरकाबारे : गोवर्धन राजोरिया / 156
बुंदेलखण्ड के गानें : उमा देव उपाध्याय / 159
मिठास रसखीर की : जवाहरलाल द्विवेदी / 162
छत्रसाल महाबली (नाटक) : सुरेश 'पराग' / 165
नाव में का धरे (कानियाँ) : हरगोविंद तिवारी / 171
भुंसारे की बेरॉ : कैलाश मड़बैया / 173

Scanned with OKEN Scanner

लोक साहित्य साँची संजीवनी

– डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया
छतरपुर

लोक साहित्य औ साहित्य को अलग-अलग मानबो एक पेड़ को उनकी जड़ से अलग कर बो आय। लोकइ तो साहित्य को प्रान आय। ऊ लोक में रस है, जीवन है, प्रेम औ प्रेरना है। जौइ लोकरस जब लोग-लोगाइयन के कंठ से प्रवाहित होत, तो बोई लोकगीत बन जात। येई जनगीत जब लय के संगै शब्दन को रूप पा जात, तब जौ जान पाबो भौत कठन हो जात कि उनखों कौन ने औ कवै शब्दन को रूप दै दओ। जैसे जंगल होत उनके खुले बातावरन में तमाम पेड़-पौधा, लता-वनस्पतियाँ उपजतीं औ फैलतीं। उनई सबन खाँ मिला कै जंगल कहो जात। कोऊ जो नई कै सकत कि इनै कौन ने बोओ़, लगाओ, उपजाओ। जे सब अपनेइ आप सहजइ होत रैत। ऊँसई लोकमन और लोककंठन की विशेषता होत। खुले आसमान के नैचें फैले वातावरण के बीच जन-मन के मनोभाव सोई सहज उच्चरित होत रैत। जोई जन-मन दुख में रोउत औ सुख में आनन्दित होत। पै दोऊ हालात में गाउत। ऊको रोबो भी लोकगीत बन जात औ गाबो भी। इन लोकगीतन में सबरे लोक जीवन की छबि मिल जात। इनै जा बात की तनकउ फिकर नई रेत कि उनै काऊ ने पोथिन में जगा दई कि नईं। पढ़े-लिखे विद्वानन ने उनै मान दओ कि नईं। वो सब तो लोकमन की मस्ती को स्वर होत जौन हवा-पानी जैसो सबरे हार अपनेइ आप फैलत रैत। बोई सबको लोक साहित्य कओ जात।

लोक साहित्य की गद्य-पद्य दोउन में समान गति होत। लोक मैं तो शब्दन को अकूत भंडार होत। उनै शब्द कोसन को सहारो नईं लेने परत। उनकी अपने जीवन की बोली-बानी उनको शब्दकोस होत। लोक की बोलचाल से शब्दकोस बनत। शब्द कोसन से लोकसाहित्य नई बनत। न उनै ब्याकरण चाउने औ न शब्दकोस। समै के संगै,

कैलाश मड़बैया

भारतीय मनीषा मूलतः लोक तत्वों पर आधारित है। भारत के हृदय स्थल में बसे मध्यदेश की लोक भाषा बुंदेली है जिसमें देश की डेढ़ हजार वर्ष पुरानी मूल और प्रमुख संस्कृति समाहित है। इस मर्म को अन्तःकरण से ग्राह्य कर ख्यात हिन्दी कवि कैलाश मड़बैया देश–विदेश में रचना पाठ कर, अपनी ही इन जड़ों से जुड़े हैं।

अपने पाँच दशकों की साहित्यिक सृजन यात्रा में कैलाश मड़बैया ने डेढ़ दर्जन से अधिक कृतियाँ साहित्य-संसार को दी हैं। स्फुट रुप से वे हिन्दी की उत्कृष्ठ पत्र–पत्रिकाओं में सतत् छप रहे हैं, हिन्दी काव्य मंचों पर छाये हैं और प्रचारित–प्रसारित हो रहे हैं। उन्हें शासकीय पुरस्कारों से अधिक जन–मन के अगणित पुरस्कार मिले हैं।

25 जून 1944 को बानपुर उ.प्र. में जन्में श्री कैलाश मड़बैया मध्यप्रदेश में उच्च प्रशासकीय पदों पर कार्यरत रहे। 2003 में वे सेवानिवृत्त हुये और अब भोपाल (मध्यप्रदेश) में ही स्वतंत्र रुप से सृजन-साधना में रत हैं। साहित्य जगत का मानना है कि हिन्दी के लिये जो कार्य कभी पं. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किया था वही रचनात्मक कार्य बुंदेली के लिये अनेक वर्षों से श्री कैलाश मड़बैया कर रहे हैं (बुंदेली दरसन पृष्ठ 82 इत्यादि), इस कृति से बुंदेली गद्य के तार सप्तक (बाँके बोल....., मीठे बोल..... और नीके बाल बुंदेली के) की पूर्ति और उक्त कथ्य की पुष्टि भी हो रही हैं।

प्रकाशित कृतियाँ

खण्ड काव्य 'जय वीर बुंदेले ज्वानन की'
विंध्य के बाँकुरे
चेहरा समय का
आँगन खिली जुँदइया
किसने न्यौता है सूरज को
बहता पानी निर्मला
बुंदेलखण्ड के जैन तीर्थ
बुंदेलखण्ड का विस्मृत वैभव–बानपुर
बुंदेलखण्ड के इतिहास पुरुष
(भारत के राष्ट्रपति द्वारा लोकार्पण से सम्मानित)
महक माटी की
काव्यांजलि
बुंदेली के प्रतिनिधि कवि
प्यासा बुंदेलखण्ड
उत्सर्ग
सहकार
बाँके बोल बुंदेली के
मीठे बोल बुंदेली के
नीके बोल बुंदेली के

कतिपय प्रमुख पुरस्कार

साहित्य वारिधि–प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन
साहित्य शिरोमणि–बृज साहित्य संगम मथुरा
लोक साहित्य संगम अलंकरण–2002 जबलपुर
बुंदेल श्री–रजत पदक–मित्र न्यास
म.प्र. के राज्यपाल, मुख्यमंत्री का नागरिक अलंकरण
बुंदेलखण्ड गौरव–नगर पालिका टीकमगढ़, म.प्र.
उ.प्र. नागरिक सम्मान–2009, सहयोग परिषद् लखनऊ
श्रमण विद्वत सम्मान–श्रवणबेलगोल, कर्नाटक
हिन्दी सेवा सम्मान–चेन्नई (दक्षिण भारत)
भाषा विज्ञान सम्मान–सागर विश्वविद्यालय
हिन्दी सेवा सम्मान–जम्मू कश्मीर
अन्तर्राष्ट्रीय खजुराहो अलंकरण–2010
कालिंजर अवार्ड–विंध्य के बाँकुरे, बाँदा इण्टेक
लक्ष्मीबाई सम्मान 'जय वीर बुंदेले ज्वानन की 'कृति पर, झाँसी
'तात्याटोपे बुंदेली भाषा गौरव' सम्मान कोलारस
बुंदेल भूषण–कुण्डेश्वर 2010
आल्हा अलंकरण–संस्कारधानी जबलपुर
साहित्य सुधाकर–सृजन भारती ललितपुर
बिहारी सम्मान–बिजावर
रासिख सम्मान–बालाघाट
काव्य श्री–होशंगाबाद
सारस्वत सम्मान–झाँसी
हिन्दी दिवस सम्मान – टीकमगढ़
'अक्षर अनन्य सम्मान–2011'

भारत के बाहर इंग्लेण्ड, अमेरिका, जापान, दुबई मारीशस आदि देशों में कविता पाठ।

अनेकान्त ऐकेडमी के नेशनल चेयर पर्सन।

संप्रति–अखिल भारतीय बुंदेलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष।

– डॉ राधाबल्लभ शर्मा

Scanned with OKEN Scanner